पुराना नियम III

पुराना नियम III: पाठ्यक्रम

टिप्पणियाँ -

कक्षा #१:

I. पाठ्यक्रम परिचय।
II. कविता की किताबें:
   क. इब्रानी कविता और गीत।
   ख. पुराने नियम में बुद्धि।

कक्षा #२:

II. कविता की किताबें: (जारी।)
   क. भजन संहिता की किताब।
   ख. नीतिवचन की किताब।
   ग. अय्यूब की किताब। (परिचय)

कक्षा #३:

II. कविता की किताबें: (जारी।)
   ङ. अय्यूब की किताब। (परिचय)
III. पात्र: परिचय।

कक्षा #४:

III. पात्र: (जारी।)
   क. श्रेष्ठगीत।
   ख. रूत।
   ग. सभोपदेशक।

कक्षा #५:

IV. इतिहास की पाँच "अन्य" किताबें।
   क. बंधुआई से वापसी के तीन चरण (एज्रा और नहेम्याह)।
   ख. १ और २ इतिहास की किताबें।
   ग. दानिय्येल की किताब।
   परीक्षा।

टिप्पणियाँ -

पुराना नियम: परीक्षा
संभावित २० अंक प्रश्न

१) बाइबल आधारित बुद्धि क्या है (पृष्ठ २९५, २९६)?

२) अय्यूब के पाप को परिभाषित करें और उस पर चर्चा करें (पृष्ठ ३००, ३०१)।

३) सभोपदेशक का निष्कर्ष बताएँ और उसके संदेश पर चर्चा करें (पृष्ठ ३०८)।

संभावित १० अंक प्रश्न

१) इब्रानी "समरूपता" को परिभाषित करें और एक उदाहरण दें (पृष्ठ २९४,२९५)।

२) परमेश्वर "भय" रखने का क्या अर्थ है (पृष्ठ २९६)?

३) भजन संहिता के चार लेखकों की सूची बनाइए (पृष्ठ २९७)।

४) भजन संहिता की एक श्रेणी का नाम दें, उसे परिभाषित करें और उसका एक उदाहरण दें (पृष्ठ २९७-२९९)।

५) अय्यूब का सबसे बड़ा प्रतिफल क्या है (विशिष्ट पद्य का संदर्भ लें; पृष्ठ ३०१)?

६) एक "छुड़ाने वाले रिश्तेदार" के विचार को संक्षेप में परिभाषित करें (पृष्ठ ३०७)।

पुराना नियम III

टिप्पणियाँ -

I. पाठ्यक्रम परिचय।

क. पुराने नियम (पु.नि.) पाठ्यक्रमों की श्रृंखला।

पुराने नियम (पु.नि.) पाठ्यक्रमों की श्रृंखला:

पाठ्यक्रम की एक संक्षिप्त श्रृंखला में पूरी रीती से अध्ययन करने के लिए पुराना नियम बहुत ही बड़ा है। इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत संपूर्ण पु.नि. का अध्ययन करना हमारा लक्ष्य नहीं है। हमारा लक्ष्य निम्न के माध्यम से पु.नि. का **सर्वेक्षण** करना है:

१) विभिन्न सामान्य अध्ययन जो वचन के बड़े भाग या एक सामान्य विषय को पूरा करते हैं।

२) कई विशिष्ट अध्ययन जो वचन के एक खंड या एक विशिष्ट शीर्षक या विषय पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

हम पु.नि. के लिए इसके उद्देश्यों और इसकी सामग्री की बेहतर समझ प्राप्त करके एक प्रशंसा विकसित करने का प्रयास करेंगे।

पुराना नियम श्रृंखला को पुराने नियम के इब्रानी संस्करण (जिसे मासोरेटिक टेक्स्ट कहा जाता है) द्वारा परिभाषित तीन भागों के अनुसार तीन पाठ्यक्रमों में व्यवस्थित किया गया है:

पुराने नियम के तीन पाठ्यक्रम:

<u>पुराना नियम I:</u> **व्यवस्था** की पाँच किताबें (पंचतंत्र)। इसमें सम्मिलित हैं: उत्पत्ति, निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, गिनती, व्यवस्थाविवरण।

<u>पुराना नियम II:</u> **भविष्यद्वक्ताओं** की २१ किताबें। इसमें "पहले के भविष्यद्वक्ता" सम्मिलित हैं: यहोशू, न्यायियों, १ और २ शमूएल, १ और २ राजा; "बाद के भविष्यद्वक्ता": यशायाह, यिर्मयाह, यहेजकेल, और "बारह (होशे - मलाकी)।

<u>पुराना नियम III:</u> **लेखों** की १३ किताबें। इसमें सम्मिलित हैं: भजन संहिता, नीतिवचन, अय्यूब, श्रेष्ठगीत, रूत, विलापगीत, सभोपदेशक, एस्तेर, दानिय्येल, एज्रा, नहेमायाह, १ और २ इतिहास।

टिप्पणियाँ -

क. इस पाठ्यक्रम की विषय-सूची।

१. हम "केतुबिम" या "लेखों" नामक किताबों की श्रेणी के संबंध में पहले पाठ्यक्रम में दी गई विभाजन की विधि का उपयोग करेंगे।

२. हम सबसे पहले कविता की किताबों (भजन संहिता, नीतिवचन, अय्यूब) का अध्ययन करेंगे।

३. फिर, हम "पात्र" (श्रेष्ठगीत, रूत, विलापगीत, सभोपदेशक, एस्तेर) का अध्ययन करेंगे।

४. अंत में, हम "इतिहास" की पाँच "अन्य" किताबों का अध्ययन करेंगे (दानिय्येल, एज्रा, नहेम्याह, १ और २ इतिहास)।

II. कविता की किताबें।

क. इब्रानी कविता और गीत।

१. समरूपता।

क. इब्रानी कविता उस प्रकार की कविता नहीं है जो तुकबंदी करती है। यह अपने रूप के कारण कविता नहीं, बल्कि अपनी सामग्री के कारण है।

ख. यह इस अर्थ में कविता है कि क्रमिक पंक्तियाँ एक-दूसरे से मेल खाती हैं। इसे "समरूपता" कहा जाता है। यह विचारों की एक सममिति है जो कई अलग-अलग रूपों में प्रकट हो सकती है:

१) पर्यायवाची ("गूंज रूप") (देखें नीति २०:१)।

क) "दाखमधु" "ठट्ठा करनेवाला" और "मदिरा" "हल्ला मचानेवाली" है। अर्थात, ठट्ठा करनेवाला हल्ला मचानेवाली का पर्याय है और दाखमधु मदिरा का पर्याय है।

ख) भज. १९:१, २; ३३:६; १२१:६; अय्यूब २७:४ पर भी विचार कीजिए। क्या आप कविता ढूंढ सकते हैं?

२) विपरीतार्थक (देखें अय्यूब ४२:५; भज. १:६; नीति. १०:१)। क्या आप कविता ढूंढ सकते हैं?

३) प्रगतिशील (देखें भज. १५:२; २९:१,२; ५५:६)। दूसरी पंक्ति पहली पंक्ति के विचार को बढ़ाती है।

टिप्पणियाँ -

४) उल्टा (देखें भज. २:९; ५१:१; नीति. १८:६, ७; २३:१५, १६)। विचार के पुन: कथन में, दो पंक्तियों के क्रम को विपरीत क्रम में रखा जाता है।

५) उपमा या वर्णनात्मक (देखें भज. ४२:१; १०३:११-१३; नीति. २५:२३, २५)।

६) तुलना (देखें नीति. १५:१६, १७; १६:८; २५:२४)।

२. आलंकारिक भाषा (छवियों का उपयोग) (देखें भज. ९६:१२; ९८:८; १०४:२, ३; श्रेष्ठगीत ४:१-१६; ५५:१२; होशे १०:११-१३)। इस प्रकार के लेखन को इब्रानी कविता भी कहा जाता है।

ख. पुराने नियम में बुद्धि।

१. बुद्धि के लिए इब्रानी शब्द "होक्मा" है (देखें नीति. १:२, ७; २:२)।

क. यह व्यावहारिक गुण (निर्ग. ३१:३-५; ३५:३१-३५; १ कुरिं. २२:१५) और सैन्य और धर्मनिरपेक्ष गतिविधियों की क्षमता (यशा. १०:१३; २९:१४; अय्यूब ५:१३) को संदर्भित कर सकता है।

ख. नीतिवचन में, शब्द "जीने के गुण" को संदर्भित करता है। इसे शासन में विवेक और अच्छे न्याय से जोड़ा जा सकता है (नीतिवचन २०:२६)।

ग. यह व्यावहारिक, नैतिक, समझ है जो समस्याओं से बचने के लिए परमेश्वर के ब्रह्मांड के नियमों के भीतर काम करती है (भजन. ७:३०, ३१)।

२. अन्य संबंधित इब्रानी शब्द।

क. "मुसर" का अर्थ है निर्देश, अनुशासन, सुधार (नीति. १:२, ३, ७, ८)। इसका उद्देश्य शिक्षित करना और सुधार करना है (नीति. ३:११)।

ख. "बीनाह" का अर्थ है समझ, परख (नीति. १:२; २:३)।

१) यह एक ऐसी समझ को दर्शाती है जो व्यक्ति को अच्छी रीति से परखने में सक्षम बनाती है (नीति. १:५)।

२) यह "बुद्धि" के बहुत निकट से संबंधित है (नीति. ४:७)।

ग. "हास्केल" का अर्थ है बुद्धिमान व्यवहार, समझदारी और ऐसा गुण जिसके परिणामस्वरूप सफलता और समृद्धि मिलती है (१ शमू. १८:१४; यिर्म. २३:५; ५२:१३ है)।

टिप्पणियाँ -

घ. "ओरमाह" का अर्थ है विवेक, सामान्य समझ (नीति. ८:५,१२)। इसका उपयोग किसी ऐसे व्यक्ति का वर्णन करने के लिए किया जाता है जो समझदार है (नीति. १२:२३; १३:१६; १५:५)।

ङ. "दाथ" का अर्थ है ज्ञान जो अभ्यास और अनुभव का परिणाम है (नीति. २४:५; १:४, ७; २:५, ६, १०)। यह बुद्धिमान व्यक्ति की धारणा भी हो सकती है (सभो. १:१८)।

च. "मेज़िम्माह" का अर्थ है अच्छी योजना का परिणाम (नीति. ३:२१; ५:२; ८:१२; १:४; २:११)।

३. **"बुद्धि"** का मूल अर्थ।

क. अध्ययन करें अय्यूब २८:२८; भज. १११:१०; नीति. १:७; ९:१०; १५:३३।

१) बुद्धि क्या है?

२) इन पद्यों से समझने के लिए सबसे महत्वपूर्ण शब्द क्या हैं?

ख. शब्द "मूल" प्राथमिक या मुख्य घटक को संदर्भित करता है। वाक्यांश "बुद्धि का मूल" का अनुवाद "बुद्धि का दिल या सार" किया जा सकता है।

ग. शब्द "भय" का अर्थ भयभीत होना नहीं है (नीति. १:३३)। यह किसी ऐसे व्यक्ति का वर्णन नहीं करता है जो दंड के भय में जीवन जीता है (१ यूह. ४:१८; इब्रा. १०:२६, २७)। इसका अर्थ है:

क. उन्हें पवित्र मानना है (८:१२, १३)।

ख. उनसे विस्मय में होना (भज. २२:२३; मला. २:५)।

ग. उनका आदर करना और उनकी आराधना करना (भज. ५०:२३; ५:७; ९६:९)।

घ. परमेश्वर की महानता को स्वीकार करना (अय्यूब ३७:२३, २४; ११:७-९)।

घ. एक व्यक्ति जो परमेश्वर का भय मानता है, वह उनकी आज्ञा का पालन करेगा (सभो. १२:१३) और उनकी सेवा करेगा (यहो. २४:१४)। वह बुराई से मुड़ेगा (नीति. ३:७; ८:१३; १४:१६; १६:६) और परमेश्वर को खोजेगा और उनके साथ संबंध बनाएगा (भज. २५:१४, १५; ३४:१०, ११)।

ग. भजन संहिता की किताब।

टिप्पणियाँ -

१. भजन संहिता की किताब को निम्नलिखित पाँच खंडों में विभाजित किया गया है (कोष्ठक में पढ़ने के लिए सुझाए गए भजनों के साथ)।

क. किताब I - भज. १-४१ (भज. २५, ३७)।

ख. किताब II - भज. ४२-७२ (भज. ५१, ५७)।

ग. किताब III - भज. ७३-८९ (भज. ८६)।

घ. किताब IV - भज. ९०-१०६ (भज. ९१, १०३)।

ङ. किताब V - भज. १०७-१५० (भज. ११६, ११९, १२१, १२७, १२८, १३०, १३९, १४२-१४६)।

२. लेखक।

क. दाऊद (कम से कम कुल ७३)।

ख. आसाप (भज. ५०; ७३-८३)।

१. आसाप दाऊद के समय में एक उत्कृष्ट लेवी संगीतकार थे (नहे. १२:४६)

२. उन्हें संगीत सेवक के रूप में हेमान के साथ नियुक्त किया गया था (१ इति. १५:१६-१९)।

ग. कोरह के पुत्र (भज. ४२-४९, ८४, ८५, ८७, ८८)। वे मंदिर के गायक दल में गायक थे।

घ. सुलैमान (भज. ७२, १२७)।

३. भजन संहिता की श्रेणियाँ।

क. परिचयात्मक भजन संहिता (१, २)।

१. भज. १: व्यक्ति के लिए दो तरीके।

२. भज. २: राष्ट्रों और राजाओं के लिए दो तरीके।

टिप्पणियाँ -

ख. छुटकारे के लिए प्रार्थनाएँ, विलाप, और विनतियाँ (लगभग आधा भजन संहिता इस श्रेणी में आएगा)। कुछ उदाहरण भज. ३-६ और १३९ हैं।

ग. स्तुति के भजन संहिता (भज. १०६, १११-११३, १३५, १४६-१५०)।

१. ये वो भजन हैं जो आमतौर पर "याह की स्तुति" शब्दों के साथ आरम्भ और समाप्त होते हैं।

२. लगभग ३० अन्य भजन हैं जो स्तुति पर ध्यान केंद्रित करते हैं (देखें भज. ३३, ४८, ६५, १०३, ११८)।

घ. श्रद्धा और धन्यवाद के व्यक्तिगत गीत (भज. २१, २३, २७, ३०)।

ङ. पाप के लिए पश्चाताप (भज. ६, ३२, ५१, १४३)।

च. राजा, इस्राएल और यरूशलेम और अन्य राष्ट्रों के लिए मध्यस्थता (भज. २०, १२२)।

छ. शाप देना या प्रतिशोधी (भज. ३५, १०९)।

१. इन भजनों को परमेश्वर की महिमा और प्रतिष्ठा के लिए परमेश्वर की संतान की इच्छा के दृष्टिकोण से समझा जाना चाहिए।

२. भजनकार स्वयं बदला नहीं लेता, परन्तु न्यायपूर्ण कार्य करने के लिए सभी मनुष्यों के संप्रभु न्यायी की ओर देखता है।

३. ये भजन निर्ग. २१:२३-२५; लैव २४:१५-२२; रोमि. १२:१४, १९; प्रेरितों के काम ८:२०-२३; १३:६-१२; १ तीमु. १:२०; २ तीमु. ४:१४ के साथ मिलते हैं। ये व्यक्तियों के व्यक्तिगत शत्रुओं के विपरीत होने के रूप में सुसमाचार/परमेश्वर के शत्रुओं की ओर इंगित हैं (देखें मत्ती ५:४३-४५)।

ज. शिक्षा देनेवाले भजन संहिता (भज. १, १४, १५, ३७, ४९, १०७, १११, ११२, १२७, १२८)।

झ. प्रकृति वाले भजन संहिता (भज. २९, ६५, १०४, १४७, १४८)।

ञ. ऐतिहासिक भजन संहिता (भज. ७८, १०५, १०६)।

ट. परमेश्वर की व्यवस्था के लिए स्तुति के भजन संहिता (भज. १, १९, ११९)।

टिप्पणियाँ -

ठ. आराधना और विश्वास के अंगीकार के भजन संहिता (भज. ८, २९, ५०, ९५-१००)।

ड. मसीहा सम्बंधित भजन संहिता (भज. २, ८, १६, २२-२४, ४०, ४५, ६८, ६९, ७२, ८९, १०२, ११०, ११८, १३२)।

१. यीशु ने कहा कि भजन संहिता में उनके विषय में बात की गई थी (लूका २४:४४)।

२. सबसे महत्वपूर्ण मसीहा सम्बंधित भजन सभ्यता हैं भज. २, ४५, ७२, ११०।

घ. नीतिवचन की किताब।

१. नीतिवचन बुद्धिमानी की बातें हैं जो तुलना का उपयोग करके विवरण देती हैं।

२. नीतिवचन का अध्ययन कैसे करें।

क. अध्याय अनुसार।

१) आप प्रतिदिन एक अध्याय (पाँच भजन संहिताओं के साथ) पढ़ सकते हैं और प्रत्येक महीने एक बार किताब को पढ़ सकते हैं।

२) इस प्रकार, आप एक वर्ष में १२ बार नीतिवचन और भजन संहिता पढ़ सकते हैं।

ख. विषय अनुसार।

१) आप किताब को पढ़कर और उपयुक्त भागों का अध्ययन करके बुद्धि, भाषण, सम्बन्ध, या न्याय जैसे एक विषय का अध्ययन कर सकते हैं।

२) MOTMOT™ पाठ्यक्रम, नीतिवचन: बात करना और संबंधित करना किताब में दिए विषयों का एक सामयिक अध्ययन है।

ङ. अय्यूब की किताब।

१. लेखक।

क. परंपरा कहती है कि इसे मूसा ने लिखा था।

ख. ऐसा माना जाता है कि अय्यूब वयोवृद्ध पूर्वजों के समय में रहा होगा।

टिप्पणियाँ -

२. जीवन के मुख्य प्रश्न।

क. क्या मैं बिना आशीषों और प्रतिफलों के परमेश्वर से प्रेम करूँगा और भय रखूँगा?

ख. अय्यूब १:९ के तात्पर्यों पर मनन करें।

ग. हम अपने लिए जीते हैं या परमेश्वर के लिए? क्या हम सृष्टि के रूप में अपनी पदवी को स्वीकार करते हैं? क्या हम स्वीकार कर सकते हैं कि परमेश्वर के छुटकारे के कार्यक्रम में दुख सम्मिलित हो सकता है?

चर्चा विषय

इन "जीवन के मुख्य प्रश्नों" पर चर्चा करें क्योंकि वे छात्रों के जीवन से संबंधित हैं।

३. अय्यूब का पाप।

क. अय्यूब के पाप के विषय में समझने वाली सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि उनके पाप उनकी समस्याओं का कारण नहीं थे, परन्तु उनकी समस्याओं ने उन्हें पाप के लिए प्रेरित किया।

१) अपनी समस्याओं के बीच, उन्होंने पाप किया क्योंकि वह अपनी समस्याओं का कारण नहीं समझते थे। क्योंकि वह नहीं समझते थे, इसलिए वह परमेश्वर पर प्रश्न, संदेह और दोषारोपण करने लगे।

२) यहाँ एक बड़ा सबक है।

३) परमेश्वर संप्रभु हैं और उनके तरीके हमारे तरीकों से ऊँचे हैं, इसलिए जब हम उन्हें समझ नहीं सकते तो हमें उनसे प्रश्न भी नहीं करना चाहिए।

ख. अय्यूब का पाप अय्यूब ९:१५ में आरम्भ हुआ जब उन्होंने समझा कि परमेश्वर गलत हो सकता है क्योंकि उन्हें (अय्यूब) तो सही होना चाहिए।

१) अय्यूब का परमेश्वर के सही होने की क्षमता (उनकी धार्मिकता) का प्रकाशन सभी चीजों को नियंत्रित करने की परमेश्वर की क्षमता के विषय में उनकी समझ पर रुक जाता है।

क) इस प्रकार, अय्यूब के लिए, परमेश्वर केवल इसलिए सही हैं क्योंकि वह परिभाषित करते हैं कि क्या सही है और क्या गलत।

ख) यह सच है परन्तु यह पूर्ण नहीं है।

टिप्पणियाँ -

२) परमेश्वर न केवल अपनी संप्रभुता में सही हैं, बल्कि वह अपनी पवित्रता में भी सही हैं। वह पूर्ण रूप से शुद्ध हैं। परमेश्वर अपने स्वभाव के कारण गलत नहीं हो सकते, केवल इसलिए नहीं कि वह अन्य सभी से बड़े हैं।

३) अय्यूब ९:३२, ३३ की ओर ध्यान दें।

क) अय्यूब का यहाँ क्या तात्पर्य है?

ख) परमेश्वर के साथ बहस नहीं की जा सकती। अय्यूब का तात्पर्य है कि परमेश्वर सही हैं क्योंकि वह कहते हैं कि वह सही हैं, आवशयक नहीं कि वह वास्तव में सही हैं।

ग. अय्यूब का पाप अध्याय ३१ में जारी है।

१) ध्यान दें कि कैसे अय्यूब ने "यदि... तब" शब्दों के दोहराने के साथ स्वयं को (परमेश्वर की कीमत पर) सही ठहराने का प्रयास किया।

२) इन कथनों का क्या तात्पर्य है?

क) उनका अर्थ है कि परमेश्वर न्यायी नहीं है।

ख) परमेश्वर इसे ४०:८ में स्पष्ट करते हैं जब वह कहते हैं, "क्या तू आप निर्दोष ठहरने की मनसा से मुझ को दोषी ठहराएगा?"

४. अय्यूब के लिए प्रतिफल।

क. अय्यूब को परमेश्वर ने प्रतिफल दिया। भले ही उन्होंने अपनी समस्याओं के बीच में पाप किया था, परमेश्वर ने उनके प्रति अनुग्रह के साथ कार्य किया क्योंकि उन्होंने परमेश्वर का इंकार नहीं किया और उन्होंने शैतान को झूठा साबित कर दिया।

ख. उन्हें भौतिक रूप से प्रतिफल दिया गया था (अय्यूब ४२:१०, ११)।

ग. इससे भी महत्वपूर्ण यह बात है कि उन्हें आत्मिक रूप से परमेश्वर के पूर्ण प्रकाशन का प्रतिफल दिया गया था (अय्यूब ४२:५)। जैसा कि पूर्ण पवित्रशास्त्र के अनुरूप है, सबसे बड़ा प्रतिफल **परमेश्वर को बेहतर रीति से जानना** है।

टिप्पणियाँ -

५. परिशिष्ट: बाइबल आधारित कारण कि लोगों को क्यों कष्ट होता है।[१]

क. सार्वभौमिक दुख।

१) दुख मनुष्य के पतन का परिणाम है (रोमि. ८:२०-२२)।

क) दुष्ट और धर्मी दोनों ही बीमारी, मृत्यु, युद्ध और प्राकृतिक आपदाओं के शिकार हैं।

ख) सभी लोगों को काम करना और पसीना बहाना है (उत्प. ३:२३)।

२) सार्वभौमिक दुख में "निर्दोष" लोगों का दुख भी सम्मिलित है (लूका १३:१-५; यूह. ९:२, ३)।

ख. दंड।

१) ब्रह्मांड के नैतिक अनुशासन के भाग के रूप में, परमेश्वर को पाप को अवश्य दंडित करना चाहिए।

२) दुष्टों के विनाश के कई पद्य हैं (भज. ९:५,१५-१७; अय्यूब १५:२०-३५)।

क) अधर्मियों की सजा से संबंधित कई विशिष्ट घटनाएँ हैं:

क. जलप्रलय (उत्प. ६:५-१७)।

ख. सदोम और अमोरा (उत्प. १८:२०; १९:२४; यहू. ७)।

ग. मिस्र की दस विपत्तियाँ (भज. ७८:४९-५३)।

घ. कनानी लोग (लैव्य. १८:२४, २५; व्यव. ९:५)।

ख) परमेश्वर के लोगों के पापों का प्रतिकार (भज. ७८:१७-२२, २९-३३, ५६-६४)। गला. ६:७, ८ का सिद्धांत निश्चित रूप से कुछ दुखों को स्पष्ट करता है।

ग) पूरी पृथ्वी पर सर्वनाशकारी न्याय (प्रका. ६-१९, आदि)। मसीह के पुन:आगमन पर अधर्मियों का विनाश (२ थिस्स. १:६-९)।

टिप्पणियाँ -

ग. पश्चाताप।

१) कभी-कभी परमेश्वर के लोग परमेश्वर का ध्यान आकर्षित करने के लिए दुख उठाते हैं। इस प्रकार का दुख लोगों को वापस परमेश्वर की ओर मोड़ सकता है।

२) इसका उद्देश्य पापियों को पश्चाताप की ओर ले जाना है (देखें अय्यूब ३३:१४-३०; नीति. २०:३०; २३:१३, १४; भज. ७८:३२-३५)।

घ. अनुशासन और प्रशिक्षण।

१) दुख अनुशासन का एक रूप हो सकता है जो चरित्र और पवित्रता में वृद्धि की ओर ले जा सकता है (अय्यूब २३:१०; इब्रा. ५:८; १२:४-११)।

२) दुख का परिणाम अधिक परिपक्वता हो सकता है (याकूब १:२-४)।

३) दुख लोगों को अपने जीवन की जाँच करने के लिए प्रेरित कर सकता है। यह जाँच घमंड और आत्म-धार्मिकता को प्रकट कर सकती है (अय्यूब ३२:१, २; ३३:९, १६; ३४:५, ६)।

४) दुख स्वयं को मारने की प्रक्रिया का भाग है। यह परमेश्वर को जानने, मसीह के स्वरूप में परिवर्तित होने, और पवित्र आत्मा से भरने के साथ जुड़ा हुआ है (देखें अय्यूब ४२:१-६; लूका ९:२३-२५; २ कुरिं. ४:७-१२, १६, १७; फिलि. ३: १०)।

५) दुख लोगों को दूसरों पर तरस खाना सिखा सकता है (२ कुरि. १:३-७)।

ङ. छुटकारे का दुख।

१) प्रतिस्थानिक।

क) यीशु ने हमारे बदले दुख उठाया। वह हमारे स्थान पर मरे (यशा. ५३; १ पत. २:२३, २४)।

ख) मूसा (निर्ग. ३२:३२; इब्रा. ११:२५) और पौलुस (रोमि. ९:१-३) प्रतिस्थानिक बनने के इच्छुक थे (कुलु. १:२४; गला. ६:१७ भी देखें)।

टिप्पणियाँ -

२) बोझ उठाने वाला।

क) जरूरतमंदों की सहायता के लिए दुख और बलिदान (गला. ६:२; रोम १५:१-३; २ कुरि. ११:२३-२९)।

ख) इसमें अन्य की जान बचाने के लिए अपनी जान देना सम्मिलित हो सकता है (यूह. १५:१३; रोमि. ५:७)।

च. वह दुख जो परमेश्वर की महिमा को प्रदर्शित करता है और उसकी स्तुति करता है।

१) विश्वास का प्रदर्शन और प्रमाण (अय्यूब १:८, ९; याकूब १:१२; ५:१०, ११)।

२) मसीह के कारण दुख उठाना (१ पत. १:७; २:१८-२३; ४:१२-१९; हब. ३:१६-१९)।

३) एक शहीद के रूप में मृत्यु (प्रका.२:१०; ६:९-११; १३:१५-१८; २०:४)।

४) चंगाई और छुटकारे के माध्यम से परमेश्वर को अपनी सामर्थ और महिमा प्रकट करने का अवसर प्रदान करने हेतु दुख उठाना (यूह. ११:४, ४०; ९:३; भज. १०७:४-८; लूका १३:११-१७)।

III. पात्र ।

लेखक की टिप्पणी:

"पात्रों" की किताबें वर्ष के दौरान विभिन्न यहूदी पर्वों पर पढ़ी जाती थीं।

प्रत्येक पर्व पर, इन किताबों में से एक को लोगों के लिए पूरा पढ़ा जाता था।

क. श्रेष्ठगीत।

टिप्पणियाँ -

१. अनुवाद के तरीके।

क. अलंकारिक (प्रतीकात्मक)।

१) यहूदी - पुराने नियम के यहूदियों ने इस पुस्तक को इस्राएल के लिए परमेश्वर के प्रेम का प्रतिनिधित्व करते हुए समझा (देखें यहे. १६:८-१४)।

२) मसीही - किताब मसीह और उनकी कलीसिया के बीच संबंध का प्रतीक है।

ख. नाटकीय।

१) एक अनुवाद नाटक में दो मुख्य पात्रों को देखता है।

क) सुलैमान, युवा राजा और प्रेमी (श्रेष्ठ. १:४, १२; ३:९, ११; ७:५; ८:१२)।

ख) शूलेम्मिन, इब्रानी में "सुलैमान" का महिला रूप।

२) एक अन्य अनुवाद नाटक में तीन मुख्य पात्रों को देखता है।

क) सुलैमान, राजा जो एक युवा युवती को उसके चरवाहे प्रेमी से लुभाने का प्रयास करता है।

ख) युवा युवती।

ग) उसका चरवाहा प्रेमी।

ग. शिक्षण।

१) वैवाहिक संबंधों की पवित्रता और ईश्वरीयता पर शिक्षा की एक किताब। पुरुष और महिला के बीच अलौकिक संबंध का जश्न जिसे परमेश्वर ने ठहराया था।

२) सम्बन्ध के सिद्धांतों को चित्रित करने और सिखाने के लिए विवाह का उपयोग, जो परमेश्वर और उसके लोगों के बीच अस्तित्व में होना चाहिए।

टिप्पणियाँ -

२. एक संभावित सामान्य रूपरेखा ("शिक्षण" प्रकार की व्याख्या का उपयोग करके)।

क. विवाह की प्रत्याशा (श्रेष्ठ. १:२-२:७)।

ख. सम्बन्ध के विकास की यादें (श्रेष्ठ. २:८-३:५)।

ग. विवाह की समाप्ति (श्रेष्ठ. ३:६-५:१)।

घ. वैवाहिक जीवन में किए गए समायोजन पर कुछ विचार (श्रेष्ठ. ५:२-८:४)।

ङ. प्रेम की पुष्टि (श्रेष्ठ. ८:५-१४)।

३. मुख्य गद्यांश।

क. एक "शिक्षण" व्याख्या के दृष्टिकोण से श्रेष्ठ. ८:६, ७ पर विचार करें।

ख. यह उत्पत्ति २:२४, २५ से कैसे संबंधित है?

ग. ये पद्य कैसे दिखाते हैं कि विवाह संबंध में परमेश्वर का घनिष्ठ प्रेम के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण है?

४. किताब का उद्देश्य और उपयोग।

क. परमेश्वर ने विवाह की स्थापना की है।

१) उन्होंने संभोग के आश्चर्य की स्थापना भी की है। विवाह के तहत का सच्चा और शुद्ध संभोग करना परमेश्वर की ओर से एक उपहार है (जो स्वयं प्रेम हैं)।

२) पति और पत्नी के बीच शुद्ध प्रेम परमेश्वर के चरित्र का प्रतिबिंब है जिसने अपनी छवि में पुरुष और महिला को बनाया था (उत्प. १:२७-२८)।

ख. इसके अलावा, पुरुष और महिला की घनिष्ठता उस घनिष्ठता का प्रतिबिंब है जो परमेश्वर अपने और अपने लोगों के बीच चाहते हैं (स्मरण रखें कि उत्पत्ति ४:१ में इब्रानी शब्द नीति. ३:६ के समान है)। परमेश्वर चाहते हैं कि हम उन्हें घनिष्ठता से जानें।

टिप्पणियाँ -

ख. रूत की किताब।

१. लेखक और दिनांक।

क. यह किताब न्यायियों के समय के आसपास लिखी गई थी।

ख. यह शमूएल द्वारा लिखी गई हो सकती है।

२. मुख्य विषय - "छुड़ाने वाला रिश्तेदार" (अध्याय ३ पढ़ें)।

क. इस अवधारणा को इब्रानी शब्द "गोल" द्वारा दर्शाया गया है। यह छुटकारे का प्रारंभिक विचार है या छुटकारे का "प्ररूप" है।

ख. पुराने नियम में, "छुड़ाने वाले रिश्तेदार" विषय के विभिन्न पहलू हैं।

१) विवाह का पहलू (व्यव. २५:५-१०)।

२) भूमि पहलू (लैव्य. २५:२५)।

३) बदले या प्रतिशोध का पहलू (अय्यूब १९:२५; गिन. ३५:१९)।

४) गुलामी का पहलू (निर्ग. ६:६; लैव्य. २५:४८)।

ग. सभोपदेशक की किताब (प्रचारक)।

१. किताब की प्रकृति।

क. यह जीवन के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण रखती है। हालाँकि, इसकी नकारात्मकता का एक उद्देश्य है। इसका उपयोग सांसारिक महत्वाकांक्षाओं और इच्छाओं पर आधारित जीवन की व्यर्थता को समझाने के लिए किया गया है।

ख. नकारात्मकता चरम पर है। हालाँकि, यह तब समझ में आता है जब हमें यह एहसास होता है कि परमेश्वर के बिना जीवन भी अत्यंत नकारात्मक और अत्यंत अर्थहीन है।

ग. निराशावाद का उपयोग परमेश्वर के बिना जीवन की व्यर्थता को उजागर करने के लिए किया गया है।

टिप्पणियाँ -

२. किताब का विषय।

क. परमेश्वर के सन्दर्भ से बाहर का सारा जीवन व्यर्थ है क्योंकि मात्र जीवन स्वयं की व्याख्या नहीं कर सकता या स्वयं को अर्थ नहीं दे सकता है।

ख. केवल परमेश्वर के सन्दर्भ में जीवन का अर्थ है क्योंकि परमेश्वर के बिना जीवन अर्थहीन है।

१) जीवन का अर्थ केवल जीवन के बनानेवाले और उसके लिए उनके उद्देश्यों के सम्बन्ध में होकर ही हो सकता है।

२) यह तार्किक है। दोहराया तर्क यह है कि केवल अनन्त चीजें ही व्यर्थ नहीं हैं। बाकी सब फ़ीका और खाली होता जा रहा है।

३. किताब का निष्कर्ष और संदेश (देखें १२:१३)।

क. जीवन का अर्थ इस दो भाग सूत्र में मिलता है:

१) परमेश्वर का भय रखो (उसके साथ संबंध)।

२) परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी हों (उनकी सेवा करना)।

ख. इस दो भाग सूत्र की तुलना अन्य संस्करणों से करें जो निम्न में पाए जाते हैं:

१) भविष्यद्वक्ता: यशा. ४३:८-१३।

२) व्यवस्था: उत्प. १२:१-३।

३) यीशु की शिक्षाएँ: मत्ती २२:३७-३९।

४) पौलुस की शिक्षाएँ: फिलि. १:२२ और ३:१०।

पुराना नियम III

IV. इतिहास की पाँच "अन्य" किताबें।

टिप्पणियाँ -

क. गुलामी से वापसी के तीन चरण।

१. एज्रा १-६ (५३८ ई.पू.) - फारस के राजा के रूप में कुस्रू और यहूदियों के राज्यपाल के रूप में जरुब्बाबेल के साथ, लगभग ५०,००० गुलाम यरूशलेम लौट आए और मंदिर का पुनर्निर्माण किया।

२. एज्रा ७-१० (४५८ ई.पू.) - फारस के राजा के रूप में अर्तक्षत्र के साथ, एज्रा याजक १७५० गुलामों के साथ लौटे और यहूदियों को व्यवस्था सिखाई।

३. नहे. १-२ (४४५ ई.पू.) - अर्तक्षत्र के अधीन, नहेम्याह यहूदियों के राज्यपाल के रूप में यरूशलेम लौट आए। उन्होंने प्रशासन की स्थापना की, और शहर की दीवारों के पुनर्निर्माण की परियोजना को पूरा किया।

ख. १ और २ इतिहास की किताबें।

१. किताबों की प्रकृति।

क. ये किताबें संभवतः एज्रा द्वारा गुलामी के बाद व्यवस्था की बेदारी के भाग के रूप में लिखी गई थीं।

ख. किताबों की सामग्री परमेश्वर की संप्रभुता पर केंद्रित है।

ग. किताबों का उपयोग शमूएल और राजा की किताबों के पूरक के रूप में किया जा सकता है।

२. किताबों का जोर।

क. एज्रा एक नई बेदारी को जगाने में सहायता करने के प्रयास में अतीत की धार्मिक बेदारी पर जोर देता है।

ख. ऐतिहासिक लाभों पर भी जोर दिया गया है जो इस्राएल को विश्वासयोग्य आराधना और आज्ञाकारिता के लिए प्राप्त हुए थे।

टिप्पणियाँ -

ग. दानिय्येल की किताब।

१. सारांश - गुलामी में दानिय्येल के जीवन का लेखन जो कि विजयी परमेश्वर और सर्वनाशकारी प्रकाशन पर केंद्रित है।

२. दानिय्येल की विशेषताएँ।

क. आत्म नियंत्रण (दानि. १:८; १०:३)।

ख. साहस (दानि. ५:२२, २३)।

ग. खराई (दानि. ६:४)।

घ. प्रार्थना (दानि. २:१७, १८; ६:१०)।

ङ. नम्रता (दानि. १०:१७)।

च. आत्मिक दर्शन (दानि. ७:९-१२; १०:५, ६)।

३. सर्वनाशकारी वर्गों की व्याख्या के तरीके (अध्याय २,७-१२)।

क. ऐतिहासिक।

१) यह विचार कहता है कि दानिय्येल की किताब सिकंदर के यूनानी साम्राज्य के समय के आसपास लिखी गई थी।

२) इस विचार में, प्रतीकवाद उन ऐतिहासिक घटनाओं का प्रतिनिधित्व करती है जो पहले ही हो चुकी हैं।

ख. भविष्य बताने वाली। यह विचार उन घटनाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले प्रतीकवाद को देखता है जो अभी आने वाली थीं और मसीह के पहले और दूसरे आगमन पर ध्यान केंद्रित करती हैं।

ग. ध्यान दें दानिय्येल की किताब की व्याख्या करने के कई तरीके हैं। हम यहाँ विवरण का अध्ययन आरम्भ नहीं करेंगे, परन्तु हम एक आरेख के साथ समाप्त करेंगे जो इस अध्ययन में और रुचि को बढ़ावा दे सकता है।

पुराना नियम III

टिप्पणियाँ -

चर्चा विषय

दानिय्येल की किताब के सर्वनाशकारी संदेश में चर्चा और रुचि को बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित आरेख का उपयोग करें।

दानिय्येल

अध्याय २	अध्याय ७	अध्याय ८	का प्रतिनिधित्व:
सोने का सिर	सिंह		बाबुल (२:४८) ५३९ ई.पू. में पतन
चाँदी की छाती	रीछ	मेढ़ा	मादी/फारस (८:२०) ३३० ई.पू. में पतन
पेट और जाँघें पीतल की	चीता	बकरा	यूनान (८:२१) ६३ ई.पू. में पतन।
लोहे और मिट्टी की टाँगें और पैर	भयंकर जन्तु		४०० ई.स. में रोमी साम्राज्य का पतन

निष्कर्ष:

इसके साथ ही पुराने नियम का हमारा अध्ययन समापन होता है। हमें अब इसकी सामग्री के विषय में सामान्य जागरूकता और समझ होनी चाहिए। हम कुछ विशिष्ट मुद्दों को अधिक विस्तृत रीति से भी संबोधित कर सकते हैं (जैसा कि समय की अनुमति दे, शिक्षक श्रृंखला की समीक्षा के साथ पाठ्यक्रम को समाप्त कर सकता है)।

टिप्पणियाँ -

पुराना नियम III: अंतिम टिप्पणियाँ

[१]जॉन री, क्लास नोट्स से लिए गए, एरा ऑफ द राइटिंग प्रोफेट्स पाठ्यक्रम, रीजेंट यूनिवर्सिटी, १९८७